चित्रकथाएँ, कार्टून और किताबों में मज़ा

सृष्टि सहाय*

मैंने एक मर्तबा पिताजी और उनके दोस्तों को समानता के मुद्दे पर बहस करते हुए देखा था। उनकी बातों में मुद्दे बेहद नीरस लगे थे। वैसे तो इस बात को गुज़रे लगभग डेढ़ साल हो गया। पर समानता का मुद्दा मेरे दिमाग में एक प्रश्न बन कर रह गया था। उस समय मुझे समानता शब्द के बारे में कुछ नहीं पता था। पिछले साल मैंने जुलाई माह में केंद्रीय विद्यालय 39, जी.टी.सी. वाराणसी की सातवीं कक्षा में दाखिला लिया और मज़े की बात तो यह थी कि जब मैं वहाँ निर्धारित कक्षा में गई तब हमारे अध्यापक सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन की किताब की एक चित्रकथा के माध्यम से समानता के बारे में बता रहे थे। मुझे सबसे अच्छा समानता के बारे में तब समझ में आया जब मैंने अपनी किताब का चित्रकथा का कोना समझा। और इस चित्रकथा के साथ जुड़े संवाद मैं आप सबके साथ बाँटना चाहती हूँ, जिससे आप यह सोचने पर मजबूर हो जाएँ कि हमारे देश में क्या समानता की बात, हमारे आस-पास के गरीबों के लिए काफ़ी है? चित्र में चुनाव के दिन कांता और उसकी दोस्त सुजाता वोट डालने की बारी का इंतजार कर रही थीं। बातचीत कर रही थीं। बातचीत की बानगी कुछ इस तरह है-

कांता- कितनी अच्छी बात है न सुजाता, कि हम सब अपने देश में समान नागरिक के रूप में वोट डाल सकते हैं। जैन साहब भी हमारे इसी लाइन में खड़े हैं।

सुजाता- हाँ, बिल्कुल। चल कांता अब तेरी बारी आई।

कांता- मैं तो उसे वोट दूँगी, जिसने हमारे मोहल्ले में पानी की पाइप लाइन का वादा किया है। (फिर सुजाता से)-रोमा बुखार से बीमार है, और उसे अस्पताल लेकर जाना है....पर पहले जैन साहब के घर का काम कर आऊँ.... और उनसे कुछ पैसे उधार ले आऊँ...। (घर पर रोमा से)- ले, दवा पी ले, कुछ अच्छा लगेगा तुझे। और मैं जब शाम को लौटूँगी, तो हम अस्पताल चलेंगे ठीक है न। (फिर मन में)- रोमा बार-बार बीमार नहीं हो जाएगी तो क्या होगा। इस बस्ती में तो कभी साफ-सफ़ाई होती ही नहीं है।

(फिर वह वहाँ जाती है, जहाँ वह काम करती है।)

*आठवीं 'स', केंद्रीय विद्यालय, 39 जी.टी.सी., वाराणसी, उत्तर प्रदेश।

मैडम- कोनों को अच्छी तरह साफ करना। (मैडम कांता से)- कांता ये ले तेरे पैसे। पर पहले से पैसे माँगने की आदत मत बनाना, समझी।

कांता-जी मैडम नहीं बनाऊँगी। (उस शाम को अस्पताल में कतार में लगने में कांता रोमा से कहती है)- बस ज़रा-सी देर और बेटी हमारी बारी बस आती ही होगी। (मन में) जैन मैडम और जैन साहब के लिए वोट डालने के लिए लाइन में भले ही लगना ज़रूरी हो पर अपने बच्चों के लिए उन्हें लाइन में लगना ज़रूरी नहीं होता।

ज़ाहिर सी बात है, वोट की लाइन में कांता जैन साहब के समान तो है, लेकिन अन्य सुविधाएँ प्राप्त करने में वह काफी पीछे है। मुझे पिता की बहस का कुछ-कुछ हिस्सा समझ आने लगा।

मैंने कई बार यह देखा कि हम बच्चों को कोर्स की किताबें पढ़ने से ज़्यादा मज़ा कहानियों की किताबें पढ़ने में आता है। क्योंकि उसमें बहुत सारे चित्र बने हुए, हैं और वे रोमांच से भरे है। फिर जब मैंने कोर्स की उन किताबों के बारे में सोचना शुरू किया कि आखिर ऐसा क्यों हुआ होगा कि कोर्स की किताबों में भी कार्टून और चित्रकथाएँ शामिल की गईं? मुझे ऐसा लगा कि हमारे समाज के कुछ जानकारों ने इस समस्या पर बहुत सोच-विचार किया होगा, जिन्हें बच्चों की रुचियों के साथ ही बच्चों से प्यार भी होगा। उन्होंने ही हम बच्चों को शिक्षा के इस पहलू से परिचित कराया। उनके मुताबिक हमारी शिक्षा में शायद कुछ बदलाव बेहद ज़रूरी थे जिससे हम बच्चों और उनसे बनने वाला समाज शिखर तक पहुचँने के काबिल हो। तो उन्होंने बच्चों के मन में रुचि पैदा करने के लिए हमारी किताबों को रंगीन बनाया एवं चित्रकथाओं से भर दिया। और मेरा तो यह मानना है कि सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन में कार्टून कोना होने की वजह से हमारी समझ में बढ़ोतरी हुई है। और अब मैं यह भी समझने लगी कि कैसे अरुचिकर बातें भी चित्रकथा और कार्टून के ज़रिए मज़ेदार बन जाती है।

❑❑❑

प्राथमिक शिक्षक पत्रिका के बारे में

साथियों,

प्राथमिक शिक्षक पत्रिका में प्रारंभिक शिक्षा से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर आधारित ऐसे लेख प्रकाशित किए जाते है जो एक शिक्षक के लिए उपयोगी हों। इस पत्रिका के कुछ महत्वपूर्ण सरोकार हैं–

- शिक्षा संबंधी महत्वपूर्ण दस्तावेज़ों की जानकारी एवं विवेचन
- समसामयिक शैक्षिक शोध एवं अध्ययनों का विवरण
- समसामयिक शैक्षिक चिंतन
- शिक्षकों एवं शिक्षाविदों के अनुभव
- शिक्षकों एवं अभिभावकों के लिए व्यावहारिक बाल मनोविज्ञान
- शालाओं एवं शिक्षा केंद्रों की समीक्षा
- शिक्षा संबंधी खेल एवं उनकी उपयोगिता
- विभिन्न शिक्षण विधियाँ
- क्रियात्मक शोध और नवाचार
- शिक्षकों के लिए पठनीय पुस्तक के बारे में जानकारी आदि।

कैसे भेजें रचनाएँ

उपरोक्त सरोकारों पर आधारित लेख, संस्मरण, कविताएँ आदि आमंत्रित हैं। कृपया ध्यान रखें कि लेख सरल भाषा में तथा रोचक हों। शोधपरक लेखों के साथ संदर्भ साहित्य की सूची अवश्य दें। लेखों के प्रकाशन के उपरांत समुचित मानदेय की व्यवस्था है। लेखों की त्रुटिरहित टंकित प्रति अगर सी.डी. में भेज सकें तो अच्छा रहेगा। लेख ई-मेल द्वारा भी भेजे जा सकते हैं। अपने लेख निम्न पते पर भेजें–

अकादमिक संपादक
प्राथमिक शिक्षक
प्रारंभिक शिक्षा विभाग
एन.सी.ई.आर.टी.
श्री अरविंद मार्ग,
नयी दिल्ली -110016
ई. मेल- deencert @ yahoo.co.in

कैसे बनें सदस्य

इस पत्रिका के सुचारु रूप से प्रकाशन, प्रचार एवं प्रसार के लिए पाठकों तथा लेखकों का सहयोग अनिवार्य है। इस संदर्भ में आपसे निवेदन है कि इस पत्रिका के स्थायी सदस्य के रूप में अपने विद्यालय, संस्थान अथवा स्वयं को पंजीकृत करवाने का कष्ट करें। इसका वार्षिक सदस्यता शुल्क केवल ₹ 260 है और प्रति कॉपी का मूल्य मात्र ₹ 65 है। आशा है आप इस दिशा में शीघ्र ही निर्णय करके विद्यालय, संस्थान अथवा निजी वार्षिक सदस्यता के लिए कार्यवाही करेंगे। वार्षिक सदस्यता शुल्क-पत्र के लिए अपना पत्र स्वनामांकित लिफ़ाफ़े सहित **बिज़नेस मैनेजर, प्रकाशन प्रभाग (एन.सी.ई.आर.टी.) श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली-16** को भेज सकते हैं।